

শ্রীঃ
শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ
শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায় নমঃ
শ্রীসীতালক্ষ্মণভরতশক্রহনুমৎসমেত শ্রীরামচন্দ্র পরব্রহ্মণে নমঃ

শ্রীমদ্রামায়ণে রাল্মীকীযে আদিকার্যে কিঙ্কিকাকাণ্ডে
॥ ষট্টিত্রংশঃ সর্গঃ ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

শ্রী রঙ্গরামানুজ মহাদেশিকন্

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्बणभरतशङ्करहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

॥ षट्त्रिंशः सर्गः ॥

स्त्रीयं लघुत्वं श्रीरामस्य महत्त्वं च प्रतिपादयता सुग्रीरेण लम्बणं
प्रति क्कमायाः प्रार्थनं लम्बणेन तस्य प्रशंसापूर्वकं तं प्रत्यात्तना
सह चलितुमादेशकरणम्

इत्युक्तस्तारया राक्यं प्रश्रितं धर्मसंहितम्।
मृदुस्वभारः सौमित्रिः प्रतिजग्राह तद्वचः ॥ 4.36.1 ॥

तस्मिन् प्रतिगृहीते तु राक्ये हरिगणेश्वरः।
लम्बणां सुमहत्त्वासं रञ्जं क्लिन्नमिरात्यजं ॥ 4.36.2 ॥

ततः कर्णगतं माल्यं चित्रं बहुगुणं महत्।
चिच्छेद रिमदश्चासीत् सुग्रीरो बानरेश्वरः ॥ 4.36.3 ॥

स लम्बणं भीमबलं सर्वरानरसन्तमः।
अब्रवीत् प्रश्रितं राक्यं सुग्रीरः सम्प्रहर्षयन् ॥ 4.36.4 ॥

प्रणष्टा श्रीश्च कीर्तिश्च कपिराज्यं च शाश्वतम्।
रामप्रसादात् सौमित्रे पुनश्चापुमिदं मया ॥ 4.36.5 ॥

कः शक्तस्तस्य देरस्य ख्यातस्य स्नेन कर्मणा।
तादृशं प्रतिकुरीत अंशेनापि नृपात्तज ॥ 4.36.6 ॥

सीतां प्रान्क्ष्यति धर्मात्मा रधिष्यति च रारणम्।
सहायमात्रेण मया राघवः स्नेन तेजसा ॥ 4.36.7 ॥

সহায়কৃত্যং কিং তস্য যেন সপ্ত মহাদ্রুমাঃ।
গিরিশ্চ রসুধা চৈব বাণেনৈকেন দারিতাঃ ॥ 4.36.8 ॥

ধনুর্নিষ্ফারমাণস্য যস্য শব্দেন লক্ষ্মণ।
সশৈলা কম্পিতা ভূমিঃ সহায়ৈঃ কিং নু তস্য রৈ ॥ 4.36.9 ॥

অনুযাত্রাং নরেন্দ্রস্য করিষ্যেহহং নরর্ষভ।
গচ্ছতো রারণং হস্তং রৈরিণং সপুরুষসরম্ ॥ 4.36.10 ॥

যদি কিঞ্চিদতিক্রান্তং বিশ্বাসাৎ প্রণযেন রা।
প্রেষ্যস্য ক্ষমিতর্যং মে ন কশ্চিন্নাপরাধ্যতি ॥ 4.36.11 ॥

ইতি তস্য ব্রূবাণস্য সুগ্রীরস্য মহাত্মনঃ।
অভরল্লক্ষ্মণঃ প্রীতঃ প্রেম্ণা চেদমুরাচ হ ॥ 4.36.12 ॥

সর্ৱথা হি মম ভ্রাতা সনাথো বানরেশ্বর।
৳রযা নাথেন সুগ্রীর প্রপ্রিতেন বিশেষতঃ ॥ 4.36.13 ॥

যস্তে প্রভারঃ সুগ্রীর যচ্চ তে শৌচমীদৃশম্।
অর্হস্ত্বং কপিৱাজ্যস্য শ্রিয়ং ভোক্তুমনুত্তমাম্ ॥ 4.36.14 ॥

সহাযেন চ সুগ্রীর ৳রযা রামঃ প্রতাপরান্।
ৱধিষ্যতি ৱণে শত্রুনচিরান্নাত্র সংশযঃ ॥ 4.36.15 ॥

ধর্মজ্ঞস্য কৃতজ্ঞস্য সঙগ্রামেশ্বনিৱর্তিনঃ।
উপপন্নং চ যুক্তং চ সুগ্রীর তৱ ভাষিতম্ ॥ 4.36.16 ॥

দোষজ্ঞঃ সতি সামর্থ্যে কোহন্যো ভাষিতুমর্হতি।
ৱর্জযিৎৱা মম জ্যেষ্ঠং ৳রাং চ বানরসত্তম ॥ 4.36.17 ॥

সদৃশশ্চাসি রামেণ ৱিক্রমেণ বলেন চ।
সহাযো দৈৱতৈর্দত্তশ্চিৱায হরিপুঙ্গৱ ॥ 4.36.18 ॥

किङ् तु शीघ्रमितो रीर निङ्क्रम ँरं मया सह।
सान्द्रयस्व रयस्यं च भार्याहरणदुःखितम् ॥ 4.36.19 ॥

यच्छ शोकाभिभूतस्य श्रुत्वा रामस्य भाषितम्।
मया ँरं परुषाण्युक्तस्तं ऋमस्व सखे मम ॥ 4.36.20 ॥

॥ इत्यार्षे श्रीमद्रामायणे वाल्मीकीये आदिकार्ये
किङ्किङ्काकाणु षट्त्रिंशः सर्गः ॥